रसवह स्त्रोतस् के रोग

स्त्रोतस् परिचय

स्त्रोतस् शरीर के वे अवयव हैं जो दोष, धातु, मल, अन्न, जल आदि का अभिवहन करते हैं। आचार्य चरक ने 13 प्रकार के स्त्रोतस् वर्णित किये हैं। रसवह-स्त्रोतस् का मूल हृदय, दश धमनियाँ तथा रसवाही-धमनियाँ हैं[1]। अर्थात् पक्वाशय या पच्यमानाशय से आरम्भ होकर हृदय तक के वे स्त्रोतस् जो अन्न रस को धातुओं तक पहुंचाते हैं, रसवह स्त्रोतस् हैं।

रसवह स्त्रोतो दुष्टि हेतु[2]

आचार्य चरक ने विमान स्थान में रसवह स्त्रोतोदुष्टि के निम्न हेतु वर्णित किए हैं—

1. गुरु-शीत अन्न का सेवन
2. अतिस्निग्ध अन्न का सेवन
3. अतिमात्रा में अन्न का सेवन
4. हितकर व अहितकर अन्न का एक साथ सेवन (समशन)
5. अधिक चिन्ता करना आदि

रसवह स्त्रोतोदुष्टि लक्षण

आचार्यों ने रसवह स्त्रोतो दुष्टि के सामान्य व विशिष्ट लक्षण निम्नानुसार वर्णित किए हैं—

(अ) **सामान्य लक्षण**[3]

(i) दोष-धातु-मल का अधिक निकलना (अतिप्रवृत्ति)

(ii) दोष-धातु-मल का रुक जाना (संग)

(iii) सिराओं में ग्रन्थि होना

(iv) दोष-धातु-मल का विमार्गगमन होना।

---

1. i) "रसवहानां स्त्रोतसां हृदयं मूलं दश च धमन्यः।" (च.वि. 5/8)
   ii) "रसवहे द्वे, तयोर्मूलं हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्यः॥" (सु.शा. 9/12)
2. "गुरुशीतमतिस्निग्धमतिमात्रं समश्नताम्।
   रसवाहीनि दुष्यन्ति चिन्त्यानां चाति चिन्तनात्॥" (च.वि. 5/13)
3. "अतिप्रवृत्तिः सङ्गो वा सिराणां ग्रन्थयोऽपि वा।
   विमार्गगमनं चापि स्त्रोतसां दुष्टिलक्षणम्॥" (च.वि. 5/24)

Scanned with CamScanner

(ब) विशिष्ट लक्षण[1]

रसवह स्त्रोतो दुष्टि के विशिष्ट लक्षण निम्न प्रकार हैं—

(i) अन्न में अरुचि
(ii) आस्य वैरस्य
(iii) हल्लास
(iv) गौरव
(v) तन्द्रा
(vi) अंगमर्द
(vii) ज्वर
(viii) तम
(ix) पाण्डु
(x) क्लैब्य
(xi) कृशाङ्गता
(xii) अग्निमांद्य
(xiii) बली-पलित होना आदि।

रसवह स्त्रोतो दुष्टि की सामान्य चिकित्सा

आचार्य चरक के अनुसार रसवह स्त्रोतस् के समस्त रोगों में लंघन कराना सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा है[2]।

निम्न रसवह स्त्रोतोगत व्याधियों का विस्तृत वर्णन यहाँ किया जा रहा है—

1. ज्वर
2. पाण्डु
3. आमवात
4. मद-मदात्यय
5. शोथ

Scanned with CamScanner

ज्वर

- आयुर्वेद में ज्वर का वर्णन सर्वप्रथम किया गया है क्योंकि यह अत्यंत ही व्यापक माना गया है। यह स्वतंत्र रोग भी है तथा अनेक रोगों में पाया जाने वाला लक्षण भी है अनेक रोगों के उपद्रव के रूप मे भी ज्वर मिलता है।. यह ज्वर की व्यापकता ही है कि इसे व्याधि का पर्याय भी कहा गया है।. ज्वर शरीर व मन दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है। इसकी उत्पत्ति मे ~~पाचक~~-पाचन संस्थान की विकृति का विशेष महत्व है।.
- ज्वर की प्रकृति - समवायी कारण शारीर व मानस दोष हैं।
- ज्वर की प्रवृत्ति - परिग्रह से होती है।
- ज्वर का प्रभाव - "संतापः सारुची तृष्णा यांग्गमर्दो हृदि व्यथा।.
  ज्वर प्रभवो जन्मादौ निधने च महत्तमः।।(च०चि०३/६)

निदान - मिथ्याहार-विहार विप्रकृष्ट निदान
- वातादि दोष सन्निकृष्ट निदान।
विभिन्न दोषों के प्रकोपक हेतु उस विशिष्ट ज्वर के निदान होते हैं।.

सम्प्राप्ति - मिथ्याहार विहार के सेवन से कुपित हुए दोष (पृथक-2, द्वन्दज या सान्निपातज) रस धातु से मिलकर आमाशय से अग्नि को बाहर निकालकर उस अग्नि की गर्मी से सम्पूर्ण शरीर को उष्ण कर स्रोतों मे अवरोध पैदा कर जब सम्पूर्ण शरीर मे फैल जाते हैं।. तब शरीर मे ताप उत्पन्न करते हैं, एवं व्यक्ति ज्वर से पीडित हो जाता है।.

"संसृष्टाः सान्निपतिताः पृथग्वा कुपिता मलाः।
रसाख्यं धातुमन्वेत्य पक्तिं स्थानान्निरस्य च।।.
स्वेन तेनोष्मणा चैव कृत्वा देहोष्मणो बलं।
स्रोतांसि रुद्ध्वा संप्राप्ताः केवलं देहमुल्बणाः।।
संतापमधिकं देहे जनयन्ति नरस्तदा।.
भवत्युष्णसर्वाङ्गो ज्वरितस्तेन चोच्यते।।" (च०चि० 3/129-31)

- जब दोष स्वदोष प्रकोपक काल मे ज्वर उत्पन्न करते हैं तब वह प्राकृत ज्वर कहलाता है तथा जब अन्यकाल मे दोष ज्वर उत्पन्न करते हैं तब वह वैकृत ज्वर कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

सम्प्राप्ति घटक - दोष - त्रिदोष (पित्तप्रधान).
दूष्य - रसधातु एवं कोष्ठाग्नि
अधिष्ठान - आमाशय एवं सर्वशरीर
स्रोतस - रसवह स्रोतस
स्रोतोदुष्टि प्रकार - संग
स्वभाव - आशुकारी
अग्नि दुष्टि - अग्निमांद्य
साध्यासाध्यता - साध्य

भेद - ① द्विविध - 1) शारीरिक एवं मानसिक 2) सौम्य, आग्नेय ③ बर्हिवेग, अंर्तवेग, 4) प्राकृत-वैकृत 5) साध्य, असाध्य

② - काल, बल एवं अबल भेद से (5) सतत ----- चातुर्थक

③ आश्रय भेद से - रसगत ------- शुक्रगत

④ द्विविध - निज - V, P, K, VP, VK, PK, D, D
- आगन्तुज - अभिघातज, अभिशापज, अभिचारज, अभिषंगज

पूर्वरूप - ① सामान्य
"आलस्यं नयने सास्त्रे सास्ते जृम्भणं गौरवं क्लमः ।
ज्वलनातप वाय्वम्बु भक्तिद्वेषाविनिश्चतौ ॥. (च.चि. 3/28-29).

② विशिष्ट - वातिक ज्वर मे जृम्भा
पैत्तिक ज्वर मे नयनदाह
कफज " " अरुचि

लक्षण - प्रत्यात्म / सामान्य
- "संतापः सारुचिर्तृष्णा साङ्गमर्दो हृदिव्यथा ।.
(च.चि. 3/26).

- "स्वेदावरोध संतापः सर्वाङ्ग ग्रहणं तथा ।
युगपत यत्र रोगे च स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥" (सु.उ. 39/13)

- "इन्द्रियाणां च वैकृत्यं ज्ञेयं संतापलक्षणं ।
वैचित्यमरति ग्लानिर्मनस्ताप लक्षणम् ॥ (च.चि. 3/36)

Scanned with CamScanner

- चीकित्सा सिद्धांत

① नवज्वर चि. सिद्धान्त

लंघन "ज्वरादौ लंघनं शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम् ।" (यो.र.)

"ज्वरे लंघनमेवादावुपदिष्टमृते ज्वरात् ।
क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमोद्भवात् ॥" (च.चि. 3/139).

लंघन की मर्यादा 7 दिन तत्पश्चात दोषों का पाचन हो जाता है।

पाचन- "लंघनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रसः ।
पाचनान्यविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरः ॥. (च.चि. - 3/142).

पानीय प्रयोग - षड्ग पानीय - मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः ।
शृतंशीतं जलं दद्यात् पिपासा ज्वर शान्तये ॥.
(च.चि. 3/145)

कषाय रस का निषेध - स्तम्भक होने के कारण कषाय रस प्रधान द्रव्यों का निषेध.

- पाचन व शमन औषध प्रयोग -
नवज्वर व आमज्वर मे सातवें दिन पाचन औषधि तथा निरामावस्था हो जाने पर संशमन औषध.

- वमन - जब कफ की प्रधानता हो तथा दोष उत्क्लिष्ट हों

- घृतपान - कफ मंद होने पर वात पित्त प्रधान ज्वर मे दोषों के पक जाने पर 10 दिन बाद दोषानुसार औषध सिद्ध घृतपान.

- दुग्धप्रयोग - निरामज्वर, P या VP प्रधान, दाह- तृष्णा से पीड़ित रोगी में

- विरेचन - जब उपरोक्त चि. से लाभ नहीं.

- निरुह वस्ति - क्षीण रोगियों में, रोग निष्कासन हेतु दुग्धपान कराकर

- अनुवासन - बलवान रोगी मे, पुराण ज्वर मे, मलनिष्कासनार्थ.

- नस्य - शिरःशूल, शिरोगौरव मे

② सान्निपातिक ज्वर का चिकित्सा

"सर्वनैकदोषस्य क्षपणेनोद्धृतस्य वा ।
कफस्थानानुपूर्व्या वा सान्निपात ज्वरं जयेत ॥" (च.चि. 3/286).

"शमयेत् पित्तमेवादौ ज्वरेषु समवायिषु ।
दुर्निवारतरं तद्धि ज्वरार्तेषु विशेषतः ॥" (सु.उ. 39).

→ सप्तधातुगत ज्वरों का चि० सूत्र ·
- रसगत - वमन, उपवास
- रक्तगत - परिषेक, प्रदेह, संशमन
- मांसगत - विरेचन, उपवास
- मेदगत - ,, ,,
- अस्थि-मज्जा - निरूह - अनुवासन ·

- पुनरावर्तक ज्वर का चि० सूत्र
  ' मृदुभि: संशोधनै: शुद्धि यापना वस्तयो हिता: ।
  हिताश्च लघवो यूषा जाङ्गलाभिषजा रसा: ।। (च०चि० 3/340).

→ आगन्तुज ज्वरों का चि० सिद्धांत ·
→ अभिशापज व अभिचारज ज्वर - दैवव्यपाश्रय चि.
- अभिघातज - घृतपान, घृताभ्यंग, रक्तमोक्षण, मदिरापान, मांसरस भात .

→ ज्वर चिकित्सा -

① संशोधन चिकित्सा
① वमन ② विरेचन ③ निरूह बस्ति
④ अनुवासन बस्ति ⑤ नस्य ⑥ रक्तमोक्षण .

② रस / भस्म / पिष्टी · - 125 - 250 mg
, उष्णोदक / मधु
त्रिभुवनकीर्ति रस, हिंगुलेश्वर रस, स्वर्णमालिनी बसंत, कस्तूरी भैरव रस, मृत्युंजय रस, गोदंती भ०, श्रृंग भ०, जहरमोहरा पि., प्रवाल पि., लक्ष्मीविलास र

③ वटी : 250 - 500 mg उष्णोदक
संजीवनी वटी, सौभाग्य वटी, संशमनी वटी, विष्णु:ति-पुर वटी, जया वटी
अमृतासत्व, करंजादि वटी ।.

④ चूर्ण · 3 - 6 gm उष्णोदक
सुदर्शन चूर्ण, पंचकोल चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, तालीशादि चूर्ण, लवंगादि वटी, द्राक्षादि चूर्ण ·

Scanned with CamScanner

- क्वाथ / आसव - अरिष्ट   मात्रा - 10-20ml,   जल
- पटोल पंचाङ्ग क्वाथ, पाठ्यादि क्वाथ, गोजिह्वादि क्वाथ, भार्ङ्यादि क्वाथ
  गुडूच्यादि क्वाथ, अमृतारिष्ट

- घृत / तैल -   10-20ml   उष्णोदक
पंचतिक्त घृत, अमृतादि घृत, षट्पल घृत, चन्दनादि घृत, चन्दनबलालाक्षादि तैल (I.A.)

- अवलेह -   20-30 gm   दुग्ध
- द्राक्षावलेह, च्यवनप्राश

- आदर्श चि० पत्र

① त्रिभुवन कीर्ति रस - 250 mg
अमृतासत्व - 500 mg
गोदंती - 500 mg
1×2 तुलसी पत्र स्वरस

② सुदर्शन चूर्ण - 2gm / 1×2 मधु से

③ अमृतारिष्ट - 20ml / 1×2

④ च्यवनप्राश - 20gm / 1×2 दुग्ध से।

पथ्यापथ्य -

पथ्य - आहार - पुराण शालि, मुद्ग, मसूर, परवल, करेला, सहिजन, चौलाई, गुडूची, जीवन्ती, मकोय, मुनक्का, कपित्थ, अनार, यवागू, पेया, विलेपी, यव, दलिया, लघु आहार आदि।

विहार - लंघन, वमन, विरेचन, वस्ति, नस्य, अभ्यंग, विश्राम आदि।

अपथ्य - आहार - गुरु, विदाही, विष्टम्भी पदार्थ, दूषित, जल सेवन, अंकुरित अन्न, तिलकुट, समोसा, कचौरी, पीजा, बर्गर, पकौड़े, हलवा मिठाई, छोले, लस्सी।
विहार - वेगधारण, व्यायाम, दिवास्वप्न, स्नान, मैथुन, अध्यशन

Scanned with CamScanner